''औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।''

(इमाम जाफर सादिक़ अ0)

इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

हुज्जतुल इस्लाम प्रो0 हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

(पिछले शुमारे से आगे)

औरत की प्रति बहके हुए इन्सान का टेढ़ा बर्ताव

आसमानी किताबों और नबियों की पाक वाणी से पहुँचे हुए ख़ुदाई क़ानून से जो समाज अपने घमण्ड और शेख़ी की वजह से कटे रहे उनकी सोच टेढ़ी हो गई और वे दुनिया और दुनिया के लोगों के बारे में सही फैसला न कर पाए। उन्होंने सारी बातें सच्चाई के ख़िलाफ ही कीं। इसी फैसले के हिसाब से उन्होंने ज़िन्दगी बिताई। इस तरह वे अपने और दूसरों पर बड़ा ज़ुल्म (अनर्थ) करते रहे। इतिहास ने भी उनकी ज़िन्दगी के भयानक और गन्दे चित्र बना दिये।

औरत के बारे में भी उन्होंने कुछ ऐसे ही सोच बनाई। उनका यह फैसला सच और सच्चाई से दूर और मानवता के ख़िलाफ रहा।

मैंने पूरब पच्छिम में लिखी जाने वाली किताब को पढ़कर यह नतीजा निकाला है कि जिन समाजों ने ख़ुदा से नाता तोड़ लिया और वहि (ख़ुदा की वाणी) से मुँह मोड़ लिया वे अपनी हवा में बह गये और ग़लत विचारों में डुबकियाँ खा रहे हैं। उन्होंने औरतों के बारे में अनर्थ फैसले कर डाले और तर्क बुद्धि से बहुत दूर की बातें गढ़ लीं।

1– औरत 100% कमज़ोर और दुर्बल है। इसलिए औरत को हर तरह मर्द के पीछे चलना चाहिए। उसके सामने क्यों, क्या और कैसे की बात नहीं करना चाहिए। उसे किसी काम में यहाँ तक कि घर के काम में अपनी टाँग अड़ाना नहीं चाहिए।

2– औरत में शैतान की रूह, राक्षस की आत्मा है। इसलिए यह इन्सान नहीं है, मानवता के बाहर है। अगर उसे कुछ कहा जा सकता है तो यही कि वह इन्सान और जानवर की बीच की कोई चीज़ है। इस तरह न उसका कोई मान है और न ही कोई क़ीमत।

3– वह ऐसी चीज़ों की मालिक नहीं बन सकती जिसका कोई मालिक हो सकता है। मर्द अगर चाहे तभी वह मालिक हो सकती है। अपनी मनमानी नहीं कर सकती।

4– उसे किसी भी चीज़ का वारिस नहीं बनाया जा सकता। वह किसी की उत्तराधिकारी नहीं हो सकती। बल्कि वह ख़ुद एक छोड़ी हुई चीज़ है जो बाप या पति के मरने के बाद किसी दूसरे के हिस्से में चली जायगी।

5– उसे पूजा–पाठ, इबादत के ठिकानों पर पैर भी रखने का हक़ नहीं है। उसकी इबादत का कोई भाव नहीं। उसे कोई पुण्य सवाब मिलने का नहीं क्योंकि वह अक़ल की कम है और माया है।

6– उसके बाप बेटे और उसके बीच सिर्फ

ख़ून का रिश्ता है और बस। और कोई हक़ या सम्बन्ध की बात नहीं कर सकती।

7– शादी के बाद उसके बेटे उसके बाप की औलाद (नाना की सन्तान) नहीं कहलाए जा सकते जबकि बेटे के बेटे दादा की औलाद कहलाए जाते हैं।

8– मरने में भी दोनों में अन्तर है। मर्द मरने के बाद अमर हो जाता है पर औरत मरने के बाद मिट जाने वाली है।

9– वह ऐसी चीज़ है जिसे किसी दूसरी चीज़ की तरह मर्द इस्तेमाल कर सकता है। उसे कर्ज़े में दे सकता है, उसे किराये पर उठा सकता है, किसी को भेंट में दे सकता है, उसे बेच सकता है, घर से निकाल सकता है, यहाँ तक कि उसे मार भी सकता है।

10– वह सेक्स लूटने का माध्यम है। वह मर्द की मौज–मस्ती के लिए पैदा की गयी है। उससे मज़ा लेने में मर्द किसी भी क़ानून को नहीं मानता।

इस सम्बन्ध में यूरोप और अमरीका वाले लोग नबियों को छोड़कर बीच के सही रास्ते से भटक गए। पच्छिम में औरत सिनेमा, टी0वी0, रेडियो, अख़बार, मैगज़ीन और सैर तफरीह के लिए रह गयी ताकि वह ज़्यादा से ज़्यादा ग्राहक खींच सके क्योंकि जंगली सेक्स के अड्डे माल, पैसे के भट्ठे हैं। **(जारी)**

बक़िया....... इबादत व अख़लाक़

की गुन्जाइश नहीं रखता इस नज़रिय–ए–इबादत का आला नमूना और मिसाल हज़रत ख़ातमुल मुर्सलीन की सीरते पाक थी और चूँकि नज़रिये की अमली शक्ल का नाम ''अख़लाक़'' है इसी लिए आप (स0) अख़लाक़ की उस मंज़िल पर पहुँचे हुए थे जहाँ पर काएनात की कोई दूसरी हस्ती नज़र नहीं आती।

''और तुम्हारे लिए यक़ीनन वह बदला है जो कभी ख़त्म ही न होगा और बेशक तुम्हारे अख़लाक़ ऊँचे हैं।'' (सूरे क़लम आयतः 3–4)

इबादत के नज़रिये की बुलन्दी का अक्स इंसानी अख़लाक़ पर पड़ना ज़रूरी है। नज़रियात ही आदतों ख़ुसूसियतों और अमली ख़ूबियों और अख़लाक़ की पैदाईश का ज़रिया बनते हैं। इसलिए अख़लाक़ को मुकम्मल करने के लिए इबादत के नज़रिये को मुकम्मल करना ज़रूरी है। हम तमाम तौहीद परस्तों के लिए इबादत का नज़रिया और अख़लाक़ की तश्कील के मामले में हज़रत ख़ातमुल मुर्सलीन (स0) से बड़ी कोई मिसाल नहीं है इसलिए हमें चाहिए कि हम आपकी सीरते पाक को हर वक़्त अपने सामने रखें और उसी मुक़द्दस सीरत के मुताबिक़ अपने अख़लाक़ व किरदार की तामीर करें ताकि हम सच्चे मुसलमान बन सकें। क़ुर्आने करीम का इरशाद हैः मुसलमानों! तुम्हारे लिए तो ख़ुद रसूल (स0) की ज़ात में एक अच्छा नमूना मौजूद है मगर हाँ यह उस शख़्स के लिए है जो ख़ुदा और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और बहुत ज़्यादा ख़ुदा का ज़िक्र करता हो। ख़ुदा हम सब को सरवरे दो आलम (स0) के नक़्शेकदम पर चलने और आप (स0) की पाक सीरत पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए।

□□□